JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में अनुशासन और समायोजन पर एक विस्तृत अध्ययन"

कन्हैया कुमार[1], डॉ आर. पी. यादव[2]

[1]शोधार्थी रामचन्द्र चंद्रवंशी विश्वविद्यालय पलामू झारखण्ड

[2]शोद्य निदेशक रामचन्द्र चंद्रवंशी विश्वविद्यालय पलामू झारखण्ड

सोध सारांश

शिक्षा और अनुशासन के बीच गहरा संबंध होता है। अनुशासन के बिना किसी प्रकार की शिक्षा संभव नहीं है। श्री अरविंद ने ब्रह्मचर्यए सत्संगति और सदाचार को विशेष महत्व दिया है। उन्होंने कहा है कि बालक जो बुरी प्रवृतियों की ओर नहीं अग्रसर होताए बल्कि अपना कार्य सहानुभूतिए प्रेम और सोहार्दता से संपन्न करता है और उच्च सामाजिक जीवन की प्राप्ति करता हैए उसे अनुशासित जीवन युक्त व्यक्तित्व कहा जाता है। बालक को आदेशों से नहींए बल्कि स्वतंत्र ढंग से कार्य करने दिया जाना चाहिएए ताकि वह मुक्तयात्मक अनुशासन के निकट आ सके। बालकों में उद्दण्डता करने की प्रवृत्ति होती हैए लेकिन इसका प्रभावकारी तरीके से समाप्त करना चाहिए। शिक्षकों का घनिष्ट प्रेमए परिचय और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार बालकों को अहंकारए उद्दण्डता और बनावट से दूर रखता है और उन्हें अनुशासित रखता है। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान देने से नहींए बल्कि छात्रों में अनुशासन की भावना का विकास करना भी है। बालक परिवार में जन्म लेता है और परिवार के सदस्यों के संपर्क में आता हैए जिससे उसमें समायोजन और अनुशासन की भावना विकसित होती है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए अनुशासन और समायोजन का महत्व अत्यंत उच्च है। यह विद्यार्थियों के शिक्षा और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अनुशासन और समायोजन की उपस्थिति उन्हें सही दिशा में मार्गदर्शन करती है और उनकी सफलता की ऊँचाइयों तक पहुँचाने में सहायक होती है। यह उन्हें समृद्धि की दिशा में बढ़ावा देते हैं और उन्हें उच्चतम स्तर की प्रदर्शन क्षमता में पहुँचने के लिए प्रेरित करते हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में अनुशासन और समायोजन से विद्यार्थियों की समृद्धि में मदद होती है।

मुख्य शब्दः माध्यमिक विद्यालयए समायोजनए सामाजिक व्यवहारए अध्ययन आदतए पारिवारिक संबंध

प्रस्तावना

शिक्षाविद्धों के अनुसारए शिक्षा और अनुशासन के बीच गहरा संबंध होता है। अनुशासन के बिना किसी प्रकार की शिक्षा संभव नहीं है। श्री अरविंद ने ब्रह्मचर्यए सत्संगति और सदाचार को विशेष महत्व दिया है। उन्होंने कहा है कि बालक जो बुरी प्रवृतियों की ओर नहीं अग्रसर होताए बल्कि अपना कार्य सहानुभूतिए प्रेम और सोहार्दता से संपन्न करता है और उच्च सामाजिक जीवन की प्राप्ति करता हैए उसे अनुशासित जीवन युक्त व्यक्तित्व कहा जाता है।

बालक को आदेशों से नहींए बल्कि स्वतंत्र ढंग से कार्य करने दिया जाना चाहिएए ताकि वह मुक्तयात्मक अनुशासन के निकट आ सके। बालकों में उद्दण्डता करने की प्रवृत्ति होती हैए लेकिन इसका प्रभावकारी तरीके से समाप्त करना चाहिए। शिक्षकों का घनिष्ट प्रेमए परिचय और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार बालकों को अहंकारए उद्दण्डता और बनावट से दूर रखता है और उन्हें अनुशासित रखता है। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान देने से नहींए बल्कि छात्रों में अनुशासन की भावना का विकास करना भी है। बालक परिवार में जन्म लेता है और परिवार के सदस्यों के संपर्क में आता हैए जिससे उसमें समायोजन और अनुशासन की भावना विकसित होती है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में अनुशासन और समायोजन का महत्वपूर्ण स्थान है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में अनुशासन और समायोजन का गुणवत्तापूर्ण अध्ययन करना अत्यंत महत्वपूर्ण हैए क्योंकि यह उनके शिक्षा और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह उन्हें सही दिशा में मार्गदर्शन करने में मदद करता है और उन्हें सफलता की ऊँचाइयों तक पहुँचाने में सहायक होता है। एक विद्यार्थी के जीवन में यह दोनों ही तत्व सामंजस्यपूर्ण रूप से मिलकर उसकी सफलता और विकास में मदद करते हैं। इस अध्ययन मेंए हम देखेंगे कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा कैसे अनुशासन और समायोजन के माध्यम से साकारात्मक रूप से प्रभावित होती है। विद्यार्थियों के लिए सही समय प्रबंधन अत्यंत महत्वपूर्ण है। अनुशासन और समायोजन उन्हें अपने समय को सही ढंग से प्रबंधित करने में मदद करते हैंए जिससे वे अपने अध्ययन में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। अच्छा समायोजन और अनुशासन विद्यार्थी और उनके शिक्षकों के बीच सही संबंध बनाए रखने में मदद करते हैं। यह शिक्षकों को विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समझने और उन्हें सही दिशा में मार्गदर्शन करने में मदद करता है। सही समायोजन और अनुशासन से विद्यार्थी अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रख सकते हैं। इससे उनकी सोचने की क्षमता बढ़ती है और वे अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में सक्षम होते हैं। अनुशासन और समायोजन विद्यार्थियों में समर्पण और उत्साह की भावना बढ़ाते हैं। ये उन्हें अपने लक्ष्यों के प्रति समर्पित रहने की भावना प्रदान करते हैं और उन्हें उच्चतम स्तर की प्रदर्शन क्षमता में पहुँचने के लिए प्रेरित करते हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में अनुशासन और समायोजन से विद्यार्थियों की समृद्धि में मदद होती है। ये उन्हें व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर समृद्धि की दिशा में बढ़ने में सहायक होते हैं। इस प्रकारए अनुशासन और समायोजन माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं और उन्हें सफल और समृद्धि भरा जीवन जीने के लिए तैयार करते हैं।

व्यक्ति का चरित्र निर्माणए ज्ञान वृद्धिए मानसिक उन्नति तथा शारीरिक स्वास्थ्य सब कुछ व्यक्ति की शिक्षा दिक्षा पर निर्भर करता है। शिक्षा का स्तर ऊंचा होने पर ही शिक्षा अपने उद्देश्यों की पूर्ति सफलतापूर्वक कर सकती है। प्राथमिक शिक्षा का बालक के विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। बाल्यावस्था में बालक का विकास शैशवावस्था की अपेक्षा अधिक तीव्र होता है। बाल्यावस्था काल के दौरान मानसिक विकास का दायरा और अत्यधिक विस्तृत हो जाता है। किशोरावस्था में मानसिक विकास की अवस्था में बुद्धि अपने विकास की चरम सीमा पर होती है। किशोरावसथा में बालकों को मानसिकए शारीरिक एवं बौद्धिक विकास विद्यालय के अनुशासनात्मक एवं समायोजित वातावरण पर निर्भर करता है। विद्यालय में प्रभावी अनुदेशनात्मक कार्य को दिशा तथा गति प्रदान करके बालकों में अनुशासन एवं समायोजन की प्रवृति का विकास किया जा सकता है। समायोजन की प्रक्रिया के द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन लाता है। समायोजन निरंतर

चलने वाली प्रक्रिया हैए जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलन रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है। लक्ष्य प्राप्ति के लिए परिस्थितियों को अनुकूल बनाना या परिस्थितियों के अनुकूल हो जाना ही समायोजन कहलाता है। समायोजन व्यक्ति अपनी क्षमताए योग्यता के अनुसार करता है। परिवारए समाजए विद्यालय आदि में अनुशासनात्मक समायोजन के शिक्षा मनोवैज्ञानिकों ने विभिन्न प्रकार के लक्षणों को बताया अथवा निर्धारित किया है.

1ण परिस्थिति का ज्ञानए नियंत्रण तथा अनुकूल आचरण

2ण संतुष्टि एवं सुख

3ण समाज के अन्य व्यक्तियों का ध्यान

4ण पर्यावरण तथा परिस्थिति से लाभ उठाना

5ण संतुलन

6ण समाजिकताए आदर्श.चरित्रए संवेगात्मक रूप से अस्थिरए संतुलित तथा दायित्वपूर्ण

7ण सहसी एवं समस्या का समाधान युक्त शोध

विद्यालय में अनुशासन और समायोजन उचित वातावरण में ही बालकों का सर्वांगीण विकास संभव है।

शोध की सार्थकता

शिक्षा मनोविज्ञान के सिद्धांतों के कारण अब समझा जाता है कि समझ के बिना दंड बच्चों को क्षति पहुंचा सकता है। बच्चों में सख्तता और अनुशासन के खिलाफ प्राकृतिक प्रवृत्ति होती है। स्कूल में एक उचित अनुशासन और संगठन के वातावरण में ही बच्चों के समृद्धि के सार्थक परिणाम हो सकते हैं। बच्चे की संगठन और अनुशासन का विकास उसे मिलने वाले अनुशासित वातावरण पर निर्भर करता है। एक बच्चे का समृद्धि और नैतिक विकास परिवार के बाद स्कूल के अनुशासित वातावरण पर निर्भर करता है। अनुशासन और संगठन युक्त बच्चे में आत्मविश्वास को बढ़ावा होता हैए जिससे वह शिक्षा के उद्देश्यों और लक्ष्यों को प्राप्त कर सकता है।

भारत में माध्यमिक स्तर की शिक्षा का स्तर स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व पूर्णरूपेण उद्देश्यहीन एवं निरर्थक माना गया है। जिस कारण विद्यार्थी अपनी माध्यमिक शिक्षा के पूर्ण होने के बाद अपने आप को उद्देश्यहीन एवं निरर्थक समझते हैं। माध्यमिक शिक्षा में सुधार लाने के लिए सरकार ने इसे प्राथमिकता देते हुए ;1952.53द्ध में माध्यमिक शिक्षा आयोगए ;1964.66द्ध में कोठारी आयोग तथा 1986 में राष्ट्रीय नीति के रूप में सुधार हेतु भरसक प्रयास किये। इसके लिए विद्यालय में विद्यार्थियों का अनुशासन एवं समायोजन का वातावरण होना अति आवश्यक है। इस पक्ष को नकारकर माध्यमिक शिक्षा के लक्ष्यों की प्राप्ति अर्थहीन होगी। उपरोक्त अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में अनुशासन और समायोजन के वातावरण के महत्व को उल्लेखित करना है।

समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या

- माध्यमिक स्तर
- शोध समस्या का कथन बेगूसराय जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में अनुशासन एवं समायोजन का अध्ययन ।

- प्रस्तावित शोध में माध्यमिक स्तर से अभिप्राय नौंवी तथा दसवीं कक्षाओं से है। इन कक्षाओं में पढने वाले छात्र.छात्राओं को माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी कहा गया है।

अनुशासन और शिक्षाः

अनुशासन विद्यार्थियों को स्वाध्याय की आदत डालने में मदद करता हैए जिसमे वे नियमित रूप से अध्ययन करते हैं और अधिक ज्ञान प्राप्त करते हैं। अनुशासन विद्यार्थियों को कक्षा में विचार.विमर्श में भाग लेने और अपने विचार साझा करने के लिए प्रेरित करता है निष्ठाः अनुशासन विद्यार्थियों को अपने लक्ष्यों के प्रति निष्ठित बनाए रखने के लिए संबोधित करता है जिसमे वे अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में सफल होते है। कर्तव्यों के पालन में अनुशासन का विशेष महत्व है। अनुशासन को आत्मसंयम तथा आत्म व्यवस्था का गुण माना गया है। अनुशासन एक मानसिक रूझान है तथा इस रूझान को स्थिर रखने के लिए सामजिकृत क्रियाएं आवश्यक हैं।

माध्यमिक शिक्षा के छात्रों में सामाजिक समायोजन की उपयोगिताः

१. समाजिक समायोजनः

समायोजन व्यक्ति की वह विशेषता है जिसके अनुसार वह अपने जीवन की मुख्य समस्याओं को समझता हैए उनके प्रति प्रतिक्रिया करता है एवं उनका समाधान करता है। इस प्रकार समायोजन निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलन रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है। शिक्षा ग्रहण करने का मुख्य स्रोत विद्यालय हैए जहाँ छात्र समाज के विभिन्न स्तरों से आनेवाले मित्रों से मिलते हैं। विशेषतरू माध्यमिक स्तर के छात्रों की आयु १२.१६ वर्ष होती हैए जिसे मनोविज्ञान की दृष्टि से किशोरावस्था कहा जाता है। इस अवधि में समाजिक समायोजन की कला का अभ्यास करना अत्यंत महत्वपूर्ण हैए जिससे बच्चों में सामाजिक गुणों का विकास होता है।

२. शान्तिभाव स्थापनः

जब व्यक्ति समाज में समायोजन के साथ शांति से रह सकता हैए तो समाज भी उसको स्वीकृति देता है। समझौता करना और मुद्दों को शांतिपूर्ण तरीके से सुलझाना कभी.कभी उचित होता हैए जिससे शान्ति बनी रहे।

३. संतुष्टिः

बच्चों में सामाजिक समायोजन की कला सीखने से वे अपने परिवेश के साथ संतुष्ट रहना सीखते हैंए जो उन्हें आंतरिक रूप से संतुष्ट और शांति प्रदान करता है।

४. सकारात्मक दृष्टिकोणः

अपने समाज में समायोजित बच्चे जानते हैं कि बदलती परिस्थितियों के साथ कैसे तालमेल बिठाना है। इससे उनमें सकारात्मक दृष्टिकोण बनता है और वे जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखते हैं।

५. गलतियों में सुधारः

किशोरावस्था के बच्चों में होने वाले अंतरद्वन्द्व के बावजूदए सामाजिक समायोजन की कला सीखने से वे अपनी गलतियों को सुधार सकते हैं और अपनी सीमाओं को स्वीकार कर सकते हैं।

६. आदर्श व्यक्तित्व:

समायोजित बच्चा उत्तम आदर्श व्यक्तित्व का निर्माण करता हैए जिसमें शारीरिकए मानसिकए और सामाजिक गुणों का सही समायोजन होता है। इससे न केवल उस समाज का अपितु सम्पूर्ण जाति और राष्ट्र का भी सर्वोत्तम विकास होता है।

मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान:

आत्म-प्रबंधन: विद्यार्थियों को आत्म-प्रबंधन और मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखने के लिए प्रेरित करना चाहिए। सही मानसिक स्वास्थ्य उनके अध्ययन और समृद्धि में मदद कर सकता है। विद्यार्थियों को आत्म-प्रबंधन और मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखने के लिए प्रेरित करने के लिए कई उपाय किए जा सकते हैं:

विद्यार्थियों को उनकी चुनौतियों और प्रबंधन के लिए सहायता करने के लिए स्कूल और कार्यक्षेत्र में समर्थन प्रदान करें। विद्यार्थियों को आत्म-मूल्यांकन के लिए प्रेरित करें ताकि वे अपनी सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं को समझ सकें और उन पर कार्रवाई कर सकें।

स्कूल में मानसिक स्वास्थ्य के महत्व को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा सत्र आयोजित करें, जिसमें मानसिक स्वास्थ्य सेंसिटाइजेशन और स्वास्थ्य सेवाओं के बारे में जागरूकता बढ़ाई जा सकती है। मानसिक स्वास्थ्य और आत्म-प्रबंधन के महत्व के बारे में शिक्षा देने के लिए विशेष कक्षाएं और कार्यक्रम आयोजित करें। विद्यार्थियों को स्कूल में मानव संसाधन सेवाओं का उपयोग करने का मौका दें, जिससे उन्हें मानसिक स्वास्थ्य और आत्म-प्रबंधन के लिए सहारा मिल सके। माइंडफुलनेस और योग जैसी धाराओं को प्रोत्साहित करें, जो मानसिक स्वास्थ्य को सुधारने और आत्म-प्रबंधन में मदद कर सकती हैं। विद्यार्थियों को आत्म-प्रबंधन और मानसिक स्वास्थ्य का महत्व समझाने के लिए प्रेरित करने की कहानियाँ बांटें, जो उन्हें सही दिशा में प्रेरित कर सकती हैं। विद्यार्थियों को आत्म-प्रबंधन और मानसिक स्वास्थ्य की देखभाल में समृद्धि के लक्ष्य बनाने के लिए प्रेरित करें, जिससे उन्हें अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में मदद मिले। इन उपायों का अनुसरण करके, शिक्षक और प्रशासनिक कर्मचारी विद्यार्थियों को आत्म-प्रबंधन और मानसिक स्वास्थ्य का सही ध्यान रखने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

प्रोत्साहन और स्तुति:

विद्यार्थियों को उनकी उत्कृष्टता को पहचानने और प्रोत्साहित करने के लिए, शिक्षकों और प्रशासनिक कर्मचारियों को कई उपाय करना चाहिए, विद्यार्थियों को उनकी उत्कृष्टता के लिए प्रशंसा और पुरस्कार प्रदान करना महत्वपूर्ण है। इससे उन्हें आत्म-समर्थन और सहानुभूति मिलती है, जो उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर सकती है। शिक्षकों को हर विद्यार्थी की स्थिति को सही से अध्ययन करना चाहिए। उनकी रुचियों, क्षमताओं, और प्रतिबद्धता का पूरा ख्याल रखना चाहिए। विद्यार्थियों के रूचियों और क्षमताओं के क्षेत्रों को पहचानने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में गतिविधियों का आयोजन करना चाहिए। विद्यार्थियों को स्कूल और क्षेत्र स्तर पर प्रोजेक्ट और प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इससे उनकी उत्कृष्टता सामाजिक मंच पर दिखती है और उन्हें पहचान मिलती है। शिक्षकों और स्कूल के कर्मचारियों को विद्यार्थियों के साथ नियमित बातचीत करने और उन्हें मेंटरिंग करने के लिए समर्थन प्रदान करना चाहिए। विद्यार्थियों के माता-पिता और समुदाय से सहयोग लेना महत्वपूर्ण है। उन्हें उनके बच्चों के पोषण, प्रेरणा, और समर्थन में सहायता करने का मौका मिलना चाहिए। विद्यार्थियों को स्वयं की उत्कृष्टता को महसूस करने और अपनी गलतियों से सीखने के लिए स्वाध्याय और आत्म-मूल्यांकन के लिए प्रेरित करना चाहिए। इन उपायों का अनुसरण करके, शिक्षक और प्रशासनिक कर्मचारी विद्यार्थियों को उनकी उत्कृष्टता

को पहचानने और प्रोत्साहित करने में सफलता प्राप्त कर सकते हैं विद्यार्थियों को सकारात्मक प्रतिप्रेक्ष्या बनाए रखने के लिए उन्हें सफलता के लिए स्तुति और प्रेरणा प्रदान करना चाहिए। इन सभी पहलुओं का सही समायोजन विद्यार्थियों को अध्ययन में सहायक हो सकता है और उन्हें समृद्धि की ऊँचाइयों तक पहुँचने में मदद कर सकता है।

सुझाव

i. बच्चों को आत्मविश्वासी होने के लिए, माता-पिता को सावधान रहना चाहिए कि वे प्यार और निषेध की सीमा पार ना करें।
ii. बच्चों को कम उम्र से ही वयस्कों की तरह नहीं, बल्कि खुद की तरह सोचने का मौका दिया जाना चाहिए।
iii. पारिवारिक अनुशासन यांत्रिक नहीं होना चाहिए। इसके बजाय, बचपन से ही आत्म-अनुशासन पैदा किया जाना चाहिए।
iv. विद्यालय को यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि बच्चा मतभेदों को भूल सके और अपने सभी सहपाठियों के साथ अच्छे संबंध बना सके।
v. बच्चे की आत्म-जागरूकता और आत्म-सम्मान को महत्व देना चाहिए।
vi. सभी मतभेदों को भूलकर ऐसी व्यवस्था करें कि सभी छात्रों नें विद्यालय की विविध सह-पाठ्यक्रमिक कार्यावली में भाग ले सकें।
vii. उन्हें समाज की विभिन्न जिम्मेदारियों को निभाने का अवसर देना होगा।
viii. उन्हें सामाजिक अनुशासन पालन करने के लिए परिवार से ही प्रोत्साहित करना है।
ix. संयुक्त परिवार से ही बच्चो का पालन करना चाहिए। अगर एकल परिवार हो तो संयुक्त परिवार के साथ जुड़े रहना चाहिए और पिता-माता को वच्चो के साथ अधिक समय व्यतीत करना चाहिए।
x. समाज के सभी वर्ग से आनेवाले बच्चो से मिलने के लिए प्रेरित करना चाहिए। कोई भेदभाव नहीं करना चाहिए।
xi. आकांक्षा पूरी ना होने की बजाय बच्चो नें चिंता, तनाव आदि से ग्रस्त ना हो इसलिए अभिभावकों को सर्वदा आंतरिक रूप से प्रेरित करना चाहिए।
xii. भौतिक जगत से ज्यादा मानवीय रिश्ते की सम्पर्क में रह सकते है इसके लिए अभिभावकों को सतर्क रहना चाहिए।

शोध के उद्धेश्य

1. माध्यमिक स्तर के विधार्थियों में अनुशासन स्तर का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के छात्र तथा छात्राओं में अनुशासन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के ग्रामिण और शहरी छान्त्रों में अनुशासन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में समयोजन स्तर का अध्ययन करना।
5. माध्यमिक स्तर के छात्र तथा छात्राओं में समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. माध्यमिक स्तर के ग्रामिण और शहरी छात्रों में समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
7. माध्यमिक स्तर के छात्रों में अनुशासन का उनके समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन करना।
8. माध्यमिक स्तर की छात्राओं में अनुशासन का उनके समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन करना।
9. माध्यमिक स्तर के ग्रामिण छात्रों में अनुशासन का उनके समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन करना।

10. माध्यमिक स्तर के शहरी छात्रों में अनुशासन का उनके समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध की परिसीमन

1. शोध का क्षेत्र बिहार राज्य के बेगूसराय जिले तक सीमित रहेगा।
2. शोध के अंर्तगत कुल 160 विद्यार्थियों को दत्त संकलन हेतू चयनित किया जाएगा।
3. शोध को केवल माध्यमिक स्तर के नौंवी तथा दसवीं के विद्यार्थियों तक ही सीमीत रखा जाएगा।
4. प्रस्तुत शोधकार्य में विद्यार्थियों में केवल अनुशासन एवं समायोजन का अध्ययन किया जाएगा।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

1. अनुशासन मापनी- स्वनिर्मित
2. समायोजन मापनी आर. के. औझा

माध्यमिक शिक्षा के छात्रों में समायोजन की प्रकृति

शिक्षा प्राप्त करने का प्रमुख स्रोत विद्यालय है, जहाँ छात्र समाज के विभिन्न स्तरों से आने वाले साथीयों से मिलता है। खासकर, माध्यमिक स्तर के छात्रों की आयु 12-16 वर्ष की प्रायः होती है, जिसे मनोविज्ञान की दृष्टि से किशोरावस्था का समय माना जाता है। इस समय को मनोवैज्ञानिकों के अनुसार व्यक्ति को समायोजित रूप से अपने साथीयों के साथ रहने के लिए अद्वितीय मौका मिलता है। आधुनिक समय में, यहाँ छात्रों को सही समय प्रबंधन, अनुशासन, और सहायक सामूहिक आधार प्रदान किया जाता है, जो उन्हें उनके शैक्षिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य में समृद्धि और सफलता की दिशा में मार्गदर्शन करने में मदद करता है। किशोरावस्था के इस महत्वपूर्ण समय में, एक व्यक्ति को समायोजित बनने के गुण को विकसित करना अत्यंत आवश्यक है। इस समायोजन क्षमता के माध्यम से, व्यक्ति आत्मनिर्भरता, सोचने की क्षमता, और आत्मविश्वास का सामरिक अधिकार प्राप्त करता है। शैक्षिक और सामाजिक दृष्टिकोण से, इस समायोजन की क्षमता छात्रों को अधिक सशक्त बनाती है ताकि वे अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में सफल हो सकें। छात्र अपने वातावरण के साथ अपने आत्मसमर्पण को समायोजित करने का प्रयास करता है ताकि वह सकारात्मक और सुरक्षित भविष्य की दिशा में बढ़ सके। इस स्थिति में, जो छात्र समायोजन स्थापित नहीं कर पाता है, वह असन्तोष, कुण्ठा, द्वन्द्व, और तनाव का अनुभव करता है, जिससे उसका शारीरिक, मानसिक, और शैक्षिक विकास प्रभावित होता है।

निष्कर्षः

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में अनुशासन और समायोजन का अध्ययन विद्यार्थियों को समृद्धि और समर्थन प्रदान करता हैए जिससे वे अच्छे नागरिकए स्वस्थ व्यक्तिए और समर्थनीय समाज के रूप में समर्थ होते हैं। इससे उन्हें अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में मदद मिलती है और वे समृद्धि से भरा जीवन जी सकते हैं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में पैदा होते हैं, बड़ा होते है, कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए जीवनयापन करते हैं। इसलिए समाज के प्रति सबकी जिम्मेदारी बनती है। हममें से प्रत्येक उन जिम्मेदारियों को पूरा करता है। आज हमारे समाज का हर पहलू आधुनिकता के सपर्श से आलोकित है। लेकिन कुछ मामलों में, मानव कल्याण बिगड़ गया है। जो वास्तव में सामाजिक कुसमायोजन का एक संशोधित रूप है। लोग आज बहुत असहिष्णु हो गए है। छोटी-छोटी बातों पर गोचना, चिन्तन करना, विधेषण करना आज लगभग विलुम हो चुका है। आज हम गभी व्यक्तिगत बेहतरी के लिए प्रयास करते हैं। किसी को परवाह नहीं है कि हमारा समाज सुधरे वा बिगड़े। इस सामाजिक

समायोजन के अभाव से समाज में कितनी ईष्र्या, भय, क्रोध, पृणा आदि दिखाई देने वाली है। उस समाज में पाले जा रहे बच्चे हमारा भविष्य हैं तो इस कुसमायोजन का असर बच्चों में भी देखा जा सकता है । आज के बच्चे परिवार, विद्यालय, समाज आदि में आक्रामक व्यवहार प्रदर्शन करते है और धैर्य की कमी उनके अंदर देखने को मिलते है। माध्यमिक स्तर के बच्चे सर्वाङ्गीण विकास के मध्य चरण में हैं। अतः सामाजिक समायोजन का अभाव उनकी संपूर्ण विकास प्रक्रिया को प्रभावित करता है। जो न केवल हमारे समाज के लिए बल्कि पूरे राष्ट्र के लिए खतरनाक हो जाता है। इसलिए पारंपरिक शिक्षा प्रक्रिया के साथ आधुनिकता का संयोजन करके शिक्षा प्रक्रिया के विकास की ओर ले जाना चाहिए जो आधुनिक नैतिक मूल्यों के साथ एक आदर्श समाज के निर्माण में मदद करता है।

सन्दर्भ सूचीः

1. कपिल, एच. के. 1996 सामान्य मनोबिज्ञान, हर प्रसाद भार्गव, 41230, कचहरी घाट, आगरा
2. पाण्डया, शकुन्तला. 1986 "जीवन मूल्य", राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, राजस्थान
3. Gangarade, K. G. 1975 Crisis of values: A Study in Generation Gape, New Delhi, New Delhi, Chetna, Publications
4. Gupta, K. 2000 Structure & organization in Indian family: The Emerging patterns, New Delhi Gyan Publishing House
5. कपिल, एच के. (2004): "अनुसंधान विधियों", हर प्रसाद भार्गय पुस्तक प्रकाशन, आगरा।
6. पारीक, अलका व गोस्वामी (2017): माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन का कुसुम शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन। जर्नल ऑफ मॉडर्न मेनेजमेंट एण्ड एन्टरप्रिन्योरशिप, वोल्यूम 7(1) जनवरी 2017. पेज 95-98
7. राय, पारसनाथ (2012) : "अनुसंधान परिचय लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
8. सिंह, अरुण कुमार (2013): मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियों मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन्न, नई दिल्ली।
9. सिंह. प्रेमपाल (2017) माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध का अध्ययन। जर्नल ऑफ स्रोशियों एज्यूकेशन एण्ड कल्वरल रिसर्च पोल्यूम 3(7) जुलाई दिसम्बर 2017, पेज 93-96